Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – I

भाग – 3

बाल विकास एवं शिक्षण विधियाँ

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL –1 - 2022

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	बाल विकास, शिक्षा शास्त्र एवं शिक्षण विधियाँ	
1.	मनोविज्ञान की अवधारणा	1
2.	बाल विकास	23
3.	अधिगम एवं अधिगम प्रक्रिया व अधिगम में आने वाली कठिनाईयाँ	51
4.	व्यक्तित्व	97
5.	समायोजन एवं कुसमायोजन	113
6.	व्यक्तिगत भिन्नता	121
7.	अभिप्रेरणा	128
8.	बुद्धि	136
9.	चिंतन, तर्क, कल्पना	151
10.	आंकलन, मापन एवं मूल्यांकन	161
11.	समग्र एवं सतत् मूल्यांकन	166
12.	उपलब्धि परिक्षण	169
13.	सीखने के प्रतिफल	173
14.	क्रियात्मक अनुसंधान	176
15.	NCF (National criculam Frame work) 2005 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा	178
16.	RTE 2009 (शिक्षा का अधिकार अधिनियम)	180
17.	मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण पुस्तकें	189

शिक्षण विधियाँ

	शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – I	
1.	सामाजिक विज्ञान/सामाजिक अध्ययन की संकल्पना	192
2.	कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाएँ	195
3.	सामाजिक अध्ययन के अध्यापन सम्बन्धी समस्याएँ	203
4.	समालोचनात्मक चिन्तन	204
	शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – II	
1.	पृच्छा/आनुभाविक साध्य	206
2.	शिक्षण अधिगम सामग्री एवं सहायक सामग्री	207
3.	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी	231
4.	प्रायोजना कार्य	246
5.	सीखने के प्रतिफल	248
6.	मूल्यांकन	253

अधिगम

- अधिगम का शाब्दिक अर्थ – सीखना है।
- मनोविज्ञान की भाषा में सीखनें की प्रक्रिया को ही अधिगम कहा जाता है।
- व्यवहार में अभ्यास के फलस्वरूप हुए अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को अधिगम कहा जाता है।

[UPTET-2013]

- मनोवैज्ञानिकों ने सीखनें को मानसिक प्रक्रिया माना है। यह क्रिया जीवनभर निरंतर चलती रहती है।
- **सीखनें की प्रक्रिया की दो मुख्य विशेषताएँ है–**

निरन्तरता	सार्वभौमिकता

- यह प्रक्रिया सदैव और सर्वत्र चलती रहती है इसलिए मानव अपने जन्म से मृत्यु तक कुछ न कुछ सीखता रहता है।
- सीखना एक विस्तृत एवं सतत् प्रक्रिया है। सीखनें का क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसको किसी एक सामान्य भाषा में व्यक्त करना मुश्किल है। अधिगम शब्द का प्रयोग परिणाम एवं प्रक्रिया दोनों रूप में होता है।

अधिगम की परिभाषाएँ

- **वुडवर्थ** – सीखना, विकास की प्रक्रिया है।
- **स्कीनर** – सीखना व्यवहार में प्रगतिशील सामंजस्य की प्रक्रिया है।
- **वुडवर्थ** – नवीन ज्ञान व नवीन प्रतिक्रियाओं को अर्जित करने की प्रक्रिया को अधिगम कहा जाता है।

[CTET-BTET-2011]

- **क्रो एवं क्रो** – "सीखना, आदत, ज्ञान, अभिवृत्तियों के अर्जन को अधिगम कहा जाता है।"
- **क्रानबेक – "**सीखना अनुभव के फलस्वरूप व्यवहार में प्रदर्शित होने वाला परिवर्तन है।"
- **गेटस व अन्य** – अनुभव व प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम हैं। **[UPTET - 2014]**
- **डॉ. एस.एस.माथुर** – "सीखना एक सक्रिय प्रक्रिया है जो व्यक्ति के अपनें कार्य पर निर्भर करती है जबकि मानसिक अभिवृद्धि तथा प्रौढ़ता विकास की प्रक्रिया है।
- **हिलगार्ड** – "नवीन परिस्थितियों में अपने आप को अनुकूलित करना ही अधिगम है।"
- **ई.ए.पील.** – सीखना व्यक्ति में एक परिवर्तन है जो उसके वातावरण के परिवर्तनों के अनुसरण से होता है।
- **स्कीनर** – व्यवहार में उत्तरोत्तर अनुकूलन की प्रक्रिया को अधिगम कहा है। **[CHHTET - 2011]**

[REET - 2016]

- **मर्फी** – अधिगम व्यवहार एवं दृष्टिकोण दोनों का परिमार्जन है।
- **गिलफोर्ड** – व्यवहार के कारण व्यवहार में परिवर्तन ही अधिगम है।
- **मॉर्गन एवं गिलीलैण्ड** – सीखना अनुभव के परिणामस्वरूप प्राणी के व्यवहार में परिमार्जन है जो प्राणी द्वारा कुछ समय के लिए धारण किया जाता है।
- **ब्लेयर, जोन्स, सिम्पसन** – व्यवहार में कोई भी परिवर्तन जो व्यक्ति के अनुभवों का फल हो और जो भावी परिस्थितियों का सामना करने में अलग प्रकार से सहायक हो अधिगम कहलाता है।

- **किंग्सले एवं गैरी** – अभ्यास के फलस्वरूप नवीन तरीके से व्यवहार करने की प्रक्रिया को अधिगम कहा जाता है।
- **प्रेसी** – सीखना उस अनुभव को कहते है जिसके द्वारा व्यवहार में परिवर्तन या समायोजन है।
- **कॉलविन** – पूर्व निर्मित व्यवहार में अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन या समायोजन है।
- **पावलाव** – अनुकूलित अनुक्रिया के परिणामस्वरूप आदत का निर्माण ही अधिगम है।
- **गार्डनर मरफी** – अधिगम वातावरण संबंधी आवश्यकता की पूर्ति के लिए व्यवहार में होनें वाला परिवर्तन है।
- **मॉर्गन** – अधिगम अपेक्षाकृत व्यवहार में स्थायी परिवर्तन है जो अभ्यास अथवा अनुभव के परिणाम स्वरूप होते है।

अधिगम की विशेषताएँ [NCERT - Page 112]

1. अधिगम एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्राणियों की जन्मजात प्रवृत्ति है।
2. अधिगम एक गतिशील एवं विकासात्मक प्रक्रिया है। **[CTET - 2012]**
3. अधिगम अमूर्त एवं आन्तरिक रूप से सम्पन्न होने वाली प्रक्रिया है।
4. अधिगम एक सार्वभौमिक घटना है। संसार के सभी प्राणी हर वक्त कुछ ना कुछ नया सीखता रहता है।
5. अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है। व्यक्ति तभी सीख सकता है जब वह सीखनें की प्रक्रिया में क्रियाशील व तत्पर रहता है।
6. अधिगम आनुवांशिकता व वातावरण दोनों पर निर्भर करता है।
7. अधिगम समस्या समाधान में सहायक है। अधिगम के दौरान व्यक्ति नवीन तथ्यों व अनुभवो को ग्रहण करता है जो विभिन्न परिस्थितियों में उपयोगी सिद्ध होता है।
8. अधिगम प्रक्रिया व्यक्ति को अपने पर्यावरण के साथ अनुकूलन में मदद करता है।
9. अधिगम एक क्रमिक व निरन्तर जारी रहने वाली प्रक्रिया है।
10. अधिगम मे पूर्व अनुभवों की लगातार पुनरावृति होती रहती है जिससे ज्ञान स्थायी हो जाता है। अध्ययन प्रक्रिया में जो बालक अधिक क्रियाशील रहता है अधिगम उतना ही प्रभावी होगा।
11. अधिगम वातावरण की उपज है। यह व्यक्तिगत और सामूहिक दोनो प्रकार से होते है। व्यक्ति जैसे वातावरण में रहता है वैसा ही ज्ञान प्राप्त करता है।
12. अधिगम के माध्यम से व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। यह एक विवेकपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रखती हैं।
13. अधिगम एक खोज है। इसमें व्यक्ति नवीन ज्ञान प्राप्त कर अपनी क्षमताओं का विकास करता है।
14. अधिगम में अनुभवों के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन होता है।
15. अधिगम सदैव उद्देश्य पूर्ण होता है। अधिगम से व्यवहार में परिवर्तन आता है जो धनात्मक और प्रगतिशील होता है। **[HTET, P.G.T - 2016]**

अधिगम प्रक्रिया

अभिप्रेरणा → अनुक्रिया → बाधाएँ → पुनर्बलन →अनुभवों का संगठन → लक्ष्य

अधिगम के प्रकार

1. ज्ञानात्मक (बौद्धिक विकास से ज्ञान प्राप्त)
2. भावात्मक (रूचि के अनुसार भाव जगाना)
3. क्रियात्मक (क्रिया करके सीखना)

1. **संवेदन गति संबंधी सीखना** – इसमें अधिगमकर्ता संवेदना व गतिय क्रियाओं से सीखता है।
   - इसे गामक अधिगम भी कहा जाता है।
   - दैनिक जीवन के अधिकांश कार्य इस श्रेणी में आते है।
     जैसे– पेन में लिखना, टाइप करना, घर का कार्य करना।
2. **साहचर्यात्मक सीखना** – जब पुराने ज्ञान तथा अनुभव के द्वारा किसी तथ्य को सीखा जाता है तो इसे साहचर्यात्मक सीखना कहते है।
3. **शारीरिक अंगो से सीखना** – बौद्धिक शक्ति के सक्रिय न होनें पर व्यक्ति शारीरिक अंगो के द्वारा सीखता है।
   जैसे – जन्म के बाद बच्चे द्वारा किसी वस्तु को पकड़ने के लिए अपने हाथ पैर सभी एक साथ चलाना।
4. **बौद्धिक अधिगम** – इस प्रकार के अधिगम में व्यक्ति मानसिक क्रियाओं के द्वारा सीखता है।
   जैसे – तर्क करना, गणितीय सूत्र को सीखना।
5. **प्रत्यक्षात्मक सीखना (अधिगम)** – जिन वस्तुओं के अपने सामने आने पर उनकी पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है उसको प्रत्यक्षण अधिगम कहते है।
6. **गुणाकंन अधिगम** – वस्तु के मूल्य, गुण आदि को स्पष्ट करने वाले ज्ञान को गुणाकंन अधिगम कहते है।
7. **सम्प्रत्यात्मक अधिगम** – बालक अपने साधारण ज्ञान के आधार पर तर्क, चिन्तन व कल्पना के माध्यम से अमूर्त बातों को सीखना।
   - इस प्रकार के अधिगम में व्यक्ति अमूर्त चिन्तन के माध्यम से कठिन एवं जटिल समस्याओं का हल खोजता है।
8. **वाचिक अधिगम** – बोलकर सीखने को वाचिक अधिगम कहते है।
   जैसे – शब्द, अंक, संकेत आदि को वाणी के माध्यम से पढ़कर सीखता है।
9. **अभिवृत्यात्मक अधिगम** – अभिवृति में किसी व्यक्ति या वस्तु आदि के प्रति धारणा होती है उसको प्रकट किया जाता है।
10. **अन्तः प्रेरणात्मक अधिगम** – यह अधिगम संवेगात्मक माध्यम से होता है। इस प्रकार के कार्य करने के लिए व्यक्ति को प्रेरणा उसके स्वयं के अन्दर से प्राप्त होती है। इस प्रकार की अन्तः प्रेरणा से व्यक्ति में त्याग, बलिदान, प्रेम आदि संवेग उत्पन्न हो जाते है।
    - डॉ. मेस के अनुसार स्मृति का स्थान मस्तिष्क में नहीं अपितु शरीर के अवयवों में है यही कारण है कि हम करके सीखते है।

राबर्ट गेने का अधिगम सिद्धांत [HTET - 2017, 2018]

- राबर्ट गेने ने अपनी पुस्तक Conditions of Learning (अधिगम की शर्ते) में अधिगम के सिद्धांत को 1965 में प्रतिपादन किया।
- गेने ने अधिगम को आठ प्रकार से श्रृंखलाबद्ध रूप में वर्गीकृत किया है। **[UPTET - 2013]**
- गेने ने इन दशाओं को सरल से जटिल क्रम में प्रस्तुत किया है। इस श्रृंखला में सबसे ऊपर समस्या समाधान है। इस श्रृंखला या पिरामिड के किसी भी स्तर पर अधिगम की प्रक्रिया होनें के लिए आवश्यक है कि उसके नीचे के सभी प्रकार के अधिगम हो चुकें है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

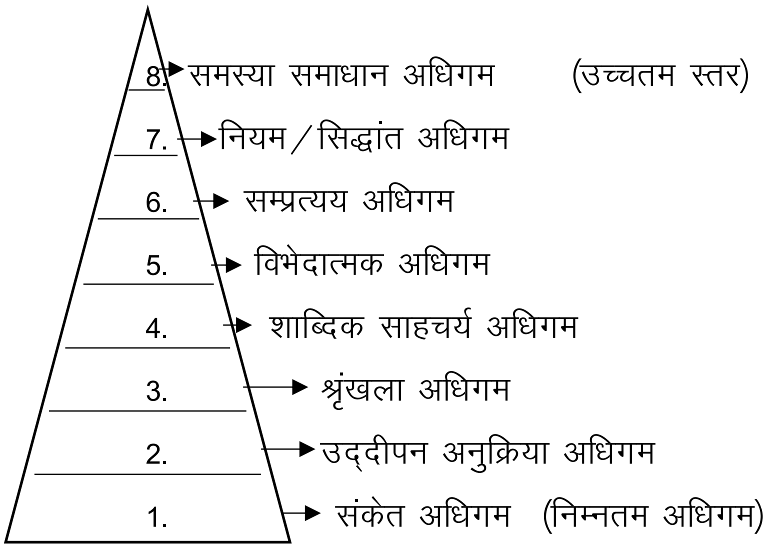

(गेने के अनुसार अधिगम के 8 प्रकार)

1. **सांकेतिक अधिगम –** संकेत अधिगम पावलाव के शास्त्रीय अनुबंधन अधिगम के समान होता है।
   - इसमें व्यक्ति दिए गए संकेत के प्रति अनुबंधित अनुक्रिया करता है।
   - संकेत अधिगम को रूढीगत अनुकूलन भी कहते है। **[UPTET - 2013]**
   - यह सबसे निम्न अधिगम माना जाता है।
2. **उद्दीपन अनुक्रिया अधिगम –** इस अधिगम में प्राणी किसी उद्दीपन के प्रति ऐच्छिक क्रिया करता है।
   उदाहरण – स्कीनर के क्रिया प्रसूत अनुबंधन में चूहे द्वारा लीवर दबाना सीखना।
3. **श्रृंखला अधिगम –** यह अधिगम एक क्रम में होने वाला अलग–अलग कई उद्दीपन अनुक्रिया संबंधो का जोड़ा है।
   जैसे – कार चलाना, दरवाजा खोलना।
4. **शाब्दिक साहचर्य अधिगम –** वह अधिगम जिसमें व्यक्ति को उद्दीपन अनुक्रिया का ऐसा क्रम जिसमें शाब्दिक अभिव्यक्ति निहित होती है।
   जैसे – गाना, कविता व कहानी के माध्यम से सीखना।
5. **विभेदीकरण अधिगम –** इसमें व्यक्ति विभिन्न उद्दीपनों के प्रति विभिन्न अनुक्रिया करना सीखता है।
   जैसे – फुटबॉल व वॉलीबॉल में अन्तर सीखना, वर्ग व आयत में अन्तर करना।
6. **संप्रत्यय अधिगम –** कई वस्तुओं के सामान्य गुणों के आधार पर कोई विशेष अर्थ ग्रहण करना।
   जैसे – हिरण, भालू, हाथी आदि का अर्थ हम जंगली पशुओं के संप्रत्य के रूप में ले सकते है।
7. **नियम/सिद्धांत अधिगम –** नियम अधिगम में दो या दो से अधिक संप्रत्ययों के बीच एक नियमित संबंध का पता चलता है।
   जैसे – बालकों द्वारा व्याकरण, गणित, विज्ञान आदि के समूह का अधिगम।
8. **समस्या समाधान अधिगम –** इस अधिगम में व्यक्ति किसी नियम के उपयोग से कोई समस्या का समाधान करता है व नए तथ्य को सीखता है।
   - यह अधिगम का सर्वश्रेष्ठ प्रकार है। **[HTET - 2013]**

   नोट – गेने नें संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया को तीन इकाइयों में बाँटा है–
   i. अधिगम की तैयारी
   ii. अधिगम अर्जन
   iii. अधिगम का स्थानातंरण

- गेने ने अधिगम की समग्र प्रक्रिया को समझनें के लिए आठ अवस्थाओं की पहचान की है –
  i. अधिग्रहण
  ii. प्रत्याशा
  iii. प्रत्यास्मरण
  iv. प्रत्यक्षीकरण
  v. अनुक्रिया
  vi. पुनर्बलन
  vii. मूल्यांकन
  viii. सामान्यकरण

अधिगम को प्रभावित करनें वाले कारक

1. **विषय सामग्री का स्वरूप** – सीखी जाने वाली विषय सामग्री कठिन व अर्थहीन होने पर सीखने में बाधा आती है, वही सामग्री सरल व अर्थपूर्ण होने पर आसानी से सीखा जा सकता है।
2. **शैक्षिक वातावरण** – अधिगम में वातावरण का बहुत बड़ा योगदान है। अधिगम बालक स्वयं की क्रियाओं व समाज दोनों से सीखता है, अतः सीखनें के लिए परिवार, समाज, विद्यालय का वातावरण उचित होना जरूरी है।
   - **योकम एवं सिम्पसन** – सामाजिक वातावरण के अभाव में अधिगम असंभव है।
3. **बालकों का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य** – जो बालक शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ होंगे वे जल्दी सीख लेंगे, इसके विपरीत जो बालक अस्वस्थ होंगे वे देरी से व काम सीख पाते है।
4. **अभिप्रेरणा** – अधिगम की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। छात्रों को क्रियाशील बनाने के लिए प्रेरको की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है। अभिप्रेरणा सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाती है।
   - प्रभावी अधिगम के लिए कक्षा में बालकों को समय–समय पर प्रशंसा अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
   - **स्टीफेन्स** – "शिक्षक के पास जितने भी साधन उपलब्ध है, उनमें प्रेरणा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।"
   - **स्कीनर** – अभिप्रेरणा अधिगम का सर्वश्रेष्ठ राजमार्ग है। अभिप्रेरणा, अधिगम की सुनहरी सड़क है।

[CTET, REET - 2016]

5. **परिपक्वता** – शारीरिक व मानसिक रूप से परिपक्वता वाले बालक नये कार्य को जल्दी सीखते है व परिपक्वता की अनुपस्थिति में अधिक समय व अधिक श्रम से सीखा जा सकता है।
   - **कोलेसनिक** – परिपक्वता और सीखना पृथक प्रक्रियाएँ नहीं है, वरन एक–दूसरे से अविच्छिन रूप में संबंध व एक–दूसरे पर निर्भर है।
6. **समय एवं थकान** – समय अधिगम को प्रभावित करता है। सुबह के समय जब बालक विद्यालय आते है, उसमें स्फूर्ति होती है व आसानी से सीखते है। जैसे–जैसे शिक्षण के घण्टे बीतते जाते है, बालको में थकान व शिथिलता आ जाती है। परिणामतः इनकी सीखने की क्रिया मंद हो जाती है।
7. **सीखने की विधि** – सीखने की विधि जितनी रूचिकर व उपयुक्त होगी, सीखना उतना ही आसान होगा।
   - प्रारम्भिक कक्षाओं में खेल विधि व करके सीखना तथा उच्च कक्षाओं में योजना विधि व सामूहिक विधि सर्वोत्तम होती है।
8. **सीखने की इच्छा** – यदि बालको में सीखने की रूचि नहीं है तो वे किसी भी स्थिति मे सीख नहीं सकेंगे।
   - अभिप्रेरणा के बाद यह सर्वाधिक प्रभावित करने वाला घटक है।
9. **अध्यापक की भूमिका** – सीखने की प्रक्रिया में पथ – प्रदर्शक के रूप में शिक्षक का स्थान अति महत्वपूर्ण है। शिक्षक जितना अधिक योग्य, अच्छे व्यक्तित्व वाला, प्रतिभाशाली व गुणवान होगा अधिगम उतना ही प्रभावी होगा।

अधिगम शैलियाँ

संबंधात्मक शैली	विश्लेषणात्मक शैली
1. सूचना का समग्र चित्र के अंश के रूप में प्रत्यक्षण करना।	1. समग्र चित्र में से किसी सूचना को निकाल लेने में सक्षम होना (विस्तृत आरेख पर फोकस)।
2. अंतर्ज्ञानात्मक चिंतन का प्रदर्शन।	2. अनुक्रमिक एवं संरचित चिंतन का प्रदर्शन।
3. मानवीय एवं सामाजिक विषयवस्तु से संबंधित तथा आनुभविक/सांस्कृतिक प्रासंगिकता की सामग्री का सुगमतापूर्वक अधिगम करना।	3. उन सामग्रियों का सुगमता से अधिगम करना जो अचेतन तथा अवैयक्तिक हों।
4. मौखिक रूप से प्रस्तु विचारों एवं सूचनाओं के लिए अच्छी स्मृति होना, विशेषतः यदि वे प्रासंगिक हो।	4. अमूर्त विचारों एवं अप्रासंगिक सूचनाओं के लिए अच्छी स्मृति होना।
5. अशैक्षणिक क्षेत्रों में अधिक कार्योन्मुख होते है।	5. शैक्षणिक संदर्भ में अधिक कार्योन्मुख होते है।
6. विद्यार्थियों की योग्यता में प्राधिकारियों के विश्वास अथवा संशय की अभिव्यक्ति से प्रभावित होते है।	6. दूसरों के अधिमत से अधिक प्रभावित न होना।
7. उद्दीप्त न करने वाले कार्य निष्पादन से अलग हटना।	7. उद्दीप्त न करने वाले कार्यों में भी सतत रूप से लगे रहने की क्षमता का प्रदर्शन करना।
8. पारंपरिक विद्यालयी परिवेश के साथ इस शैली का द्वंद्व होना।	8. अधिकांश विद्यालयी परिवेशों से इस शैली का मेल होना।

अधिगम के सिद्धांत/नियम

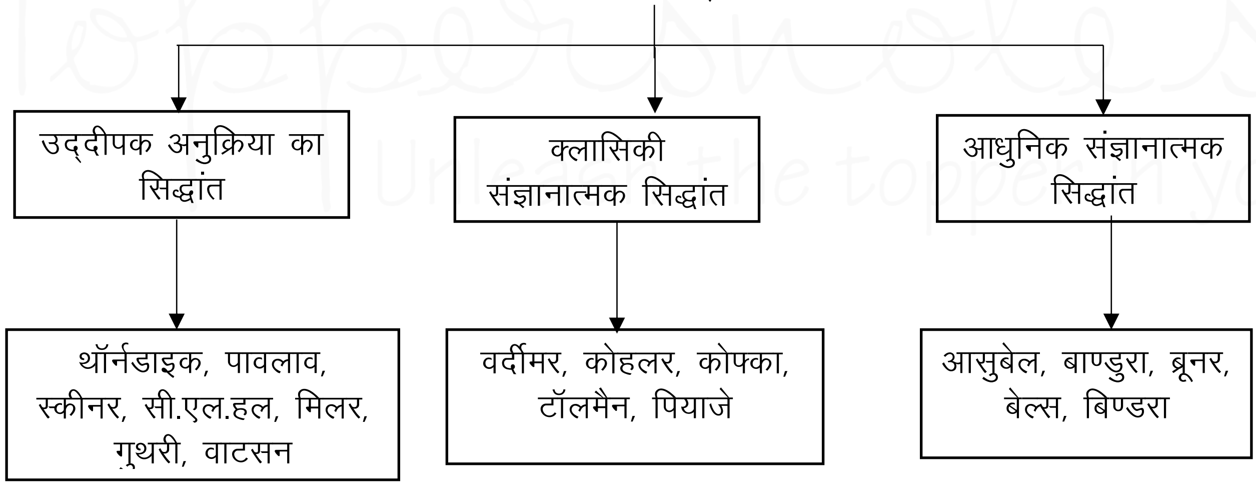

अधिगम की अवधारणाएँ

i. व्यवहारवाद – वाटसन, वुडवर्थ, स्कीनर
ii. संज्ञानवाद –
iii. संरचनावाद/निर्मितवाद – विलियम वुण्ट, टीचनर

- प्रो. बनार्ड ने अपनी पुस्तक “Psychology of Learning & Teaching” (साइकोलॉजी ऑफ लर्निंग एण्ड टीचिंग) में अधिगम को सरल बनाने के अनेक कारक बताते है।
- हिलगार्ड ने अपनी पुस्तक “Theories of Learning” में अधिगम के सिद्धांतो का वर्ण किया है।
- अमेरिकी विचारक थॉर्नडाइक ने अपनी पुस्तक “Education Psychology” में अधिगम को दो भागो में बाँटा है।

1. **मुख्य नियम (3) [UPTET - 2016]**
    i. तत्परता का नियम
    ii. अभ्यास का नियम
    iii. प्रभाव का नियम

2. **गौण नियम (5)**
    i. बहुप्रतिक्रिया का नियम
    ii. मनोवृति का नियम
    iii. आंशिक क्रिया का नियम
    iv. आत्मीकरण का नियम
    v. साहचर्य परिवर्तन का नियम

मुख्य नियम

1. **तत्परता का नियम [CTET – 2013, 2nd Grade, 1st Grade – 2014]**
   अन्य नाम – तैयारी का नियम, प्रेरणा का नियम, मानसिक तैयारी का नियम
   - इस नियम का अभिप्राय यह है कि यदि हम किसी कार्य को सीखने के लिए तैयार या तत्पर होते है तो हम उसे शीघ्र ही सीख लेते है। अगर तैयार नहीं हैं तो नहीं सीख पाते है।

   जैसे – (i) यदि बालक में अंग्रेजी सीखने की इच्छा है तो सीख लेता है अन्यथा नहीं।
   (ii) घोड़े को पानी के पास ले जाया जा सकता है, लेकिन पानी पीने के लिए बाध्य नहीं कर सकते।

   भाटिया – तत्परता या किसी कार्य के लिए तैयार होना, युद्ध को आधा विजय कर लेना है।

2. **अभ्यास का नियम**
   - **उपनाम** – उपयोग – अनुपयोग का नियम, अभ्यास – अनाभ्यास का निमय
     यदि हम किसी कार्य का अभ्यास करते है, तो हम उसे सरलतापूर्वक करना सीख जाते है। **[REET - 2018]**
   - **कोलसेनिक** – अभ्यास का नियम किसी कार्य की पुनरावृत्ति, पुनर्विचार या अभ्यास के औचित्य को सिद्ध करता है।

3. **प्रभाव का नियम [UPTET - 2016] [HTET - 2018]**
   उपनाम – संतोष या असंतोष का नियम
   - इस नियम मे के अनुसार, हम उस कार्य को सीखना चाहते है, जिसका परिणाम हमारे लिए हितकर होता है या जिससे हमें सुख या संतोष मिलता है।
   - यदि हमें किसी कार्य को करने या सीखने में कष्ट होता है, तो हम उसको कर नहीं पाते हैं अतः इसको असंतोष का नियम कहते है।

गौण नियम

1. बहुप्रतिक्रिया का नियम

- नया कार्य सीखते समय प्रतिक्रियाएँ ज्यादा होती है, पर जब वांछित प्रतिक्रिया करने से उसे सफलता मिल जाती है, तो वह उसे दोहराता है। **[HTET - 2018]**

2. मनोवृत्ति का नियम

- जिस कार्य के प्रति हमारी जैसी मनोवृत्ति होती है उसी अनुपात में हम उसको सीखते है। यदि हम कार्य करने के लिए तैयार है तो सीख जाते हैं, अगर मानसिक रूप से तैयार नहीं हैं तो कार्य को नहीं कर पाते है।

3. आंशिक क्रिया का नियम

हम जिस कार्य को करना चाहते है, उसको छोटे–छोटे भागों में विभाजित कर लेते है तो सीखना सुविधाजनक हो जाता है।

- इस नियम पर अंश से पूर्ण की और शिक्षण सिद्धांत आधारित है। **[MPTET - 2015]**

4. आत्मीकरण का नियम

इस नियम के अनुसार हम नवीन ज्ञान को अपने पुराने ज्ञान में आत्मसात कर लेते हैं।

5. साहचर्य परिवर्तन का नियम

इस नियम में पहले कभी की गई क्रिया को उसी के समान दूसरी परिस्थिति में उसी प्रकार करना। इसमें क्रिया का स्वरूप तो वही रहता है, पर परिस्थिति बदल जाती है।

जैसे – यदि माँ का बच्चा मर जाता है, तो वह उसकी फोटो को उसी प्रकार सीने से लगाती है जिस प्रकार वह बच्चे को लगाती थी।

व्यक्तित्व – (Personality)

- व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी के Personality शब्द से बना है। Personality शब्द लैटिन भाषा के शब्द परसोना (Persona) से बना है जिसका अर्थ मुखोटा या नकाब है। **[REET - 2016]**
- सामान्य शब्दों में व्यक्तित्व का अर्थ मनुष्य के शारीरिक स्वरूप, रंग रूप, वेशभूषा से है।

व्यक्तित्व की परिभाषाएँ

वुडवर्थ – व्यक्ति के व्यवहार का पूरा सार ही व्यक्तित्व है।
वैलेंटाइन – व्यक्तित्व जन्मजात व अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।
मन – व्यक्तित्व एक व्यक्ति के गठन, व्यवहार के तरीकों, रूचियों, दृष्टिकोण, क्षमताओं और तरीकों का सबसे विशिष्ट संगठन है।
गिलफोर्ड – व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।
रैक्स – व्यक्तित्व समाज द्वारा मान्य तथा अमान्य गुणों का संगठन है।
कैटल – व्यक्तित्व वह है जिसके द्वारा हम यह भविष्यवाणी कर सकते है कि कोई व्यक्ति किस परिस्थिति में क्या करेगा।
आलपोर्ट – व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है जो परिवेश के प्रति होने वाले उसके अपूर्व अभियोजनों का निर्णय करते है। **[UPTET - 2016]**
प्रिंस – व्यक्तित्व समस्त शारीरिक, जन्मजात व अर्जित वृत्तियों का योग है।
बोरिंग व अन्य – व्यक्तित्व, व्यक्ति का अपने वातावरण के साथ अपूर्व व स्थायी समायोजन है।
ड्रेवर – व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक व सामाजिक गुणों के एकीकृत तथा गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है। जिसे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान प्रदान में व्यक्त करता है।
बिंग एवं हण्ट – व्यक्तित्व एक व्यक्ति के संपूर्ण व्यवहार प्रतिमान और उसकी विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है।
लिंटन – व्यक्तित्व, व्यक्ति से संबंधित समस्त मनोवैज्ञानिक क्रियाओं एवं दशाओं का सम्मिलित रूप है।

व्यक्तित्व की विशेषताएँ

- व्यक्तित्व के अंतर्गत शारीरिक व मनोवैज्ञानिक दोनों ही घटक होते हैं।
- किसी व्यक्ति विशेष में व्यवहार के रूप में इसकी अभिव्यक्ति पर्याप्त रूप से अन्यय होते है।

आत्मचेतना – आत्मचेतना के कारण मानव को सब जीवधारियों में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया जाता है और व्यक्तित्व की उपस्थिति को स्वीकार किया जाता है।
विकास की निरंतरता – व्यक्तित्व हमेशा निर्माण की प्रक्रिया में संलग्न रहता है या विकास का क्रम सतत् रहता है।
दृढ़ इच्छा शक्ति – यह शक्ति व्यक्ति को जीवन की कठिनाईयों से संघर्ष करके अपने व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाने की क्षमता प्रदान करती है।
सामाजिकता – व्यक्ति जब समाज के संपर्क में रहेगा तो उसमें सामाजिकता के गुण अर्जित होंगे अन्यथा नहीं।

मानसिक स्वास्थ्य व शारीरिक – अच्छे व्यक्तित्व के लिए अच्छे शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य का होना जरूरी है बगैर अच्छे स्वास्थ्य के व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकता है।

सामंजस्य – व्यक्ति जब बाह्य वातावरण एवं आन्तरिक जीवन से सामंजस्य स्थापित कर लेता है तो व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है।

एकता – व्यक्ति में शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक, संवेगात्मकता में एकरूपता जरूरी होती है।

भाटिया – व्यक्तित्व मानव की सभी शक्ति के गुणों का संगठन व एकीकरण है।

निर्देशित लक्ष्य को प्राप्त करना – मानव के व्यवहार का सदैव एक निश्चित उद्देश्य होता है और वह सदैव किसी न किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संचालित किया जाता है। उसके व्यवहार व लक्ष्यों से अवगत होकर हम उसके व्यक्तित्व का सहजता से पता लगा सकते है।

व्यक्तित्व के प्रकार

- भारतीय आयुर्वेदिक ग्रंथ चरक संहिता में व्यक्तित्व के तीन प्रकार माने गये है।
  1. वात
  2. पित
  3. कफ
- वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार – 3 प्रकार
  1. **सत्व** – स्वच्छता, सत्यवादिता, कर्त्तव्यनिष्ठता, अनाशक्ति
  2. **रजस** – असूया (ईर्ष्या), असंतोष, इन्द्रिय तुष्टि की इच्छा
  3. **तमस** – क्रोध, घमण्ड, अवसाद, आलस्य, असहायता

हिप्पोक्रेप्टस के अनुसार – हिप्पोक्रेप्टस ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण अपनी पुस्तक "Nature of Man" में शारीरिक द्रव के आधार पर किया। व्यक्तित्व के चार प्रकार बताये है– **[REET - 2016]**

1. **पीला पित्त या क्रोधी – (Phlegmatic)**
   विशेषताएँ – इस प्रकार के व्यक्ति क्रोधी, आक्रमक, झगड़ालू, गुस्सैल, परिश्रमी, महत्त्वकांक्षी थे संवेगात्मक रूप से सशक्त पर शारीरिक रूप से कमजोर होते है।
2. **काला पित्त या उदासीन– (Melancholic)** – इस प्रकार के व्यक्ति निराशावादी, नकारात्मक विचार, उदासीन होते है।
3. **रक्त पित्त या आशावादी (Sanguine)** – इस प्रकार के व्यक्ति उत्साही, आशावादी, हँसमुख, कर्मठ संवेगात्मक रूप से स्थिर, संतुलित, सशक्त होते है।
4. **कफ पित्त (Choleric)** – शांत, भाव शून्य, शरीर से निर्बल, संवेगात्मक रूप से कमजोर, चिड़चिड़ा स्वभाव, शारीरिक रूप से कमजोर।

क्रेशमर का वर्गीकरण – क्रेशमर ने व्यक्तित्व के चार प्रकार बताये है – **[UPTET - 2017]**

1. **पिकनिक प्रकार (Pinic Type) –** गोलकाय प्रकार भी कहा जाता है।
   - मिलनसार, विनोदप्रिय, आरामदायी, लोकप्रिय छोटा कद, चर्बीयुक्त व मोटा शरीर, बर्हिमुखी, खाने–पीने के शौकीन होते है।
2. **एथेलैटिक (AthleticType)–** इस प्रकार के व्यक्ति बलशाली, सशक्त शरीर, खिलाड़ी, आशावादी, दृढ़ निश्चय, सामाजिक, सुखी, दृढ़, समायोजित होते है।

3. **लम्बकाय/लेप्टोसोमेटिंक (Leptosomatic Type)** – इस प्रकार के व्यक्ति दुबले–पतले शरीर, एकांतप्रिय, शर्मिलें, असमायोजित, निराशायुक्त, अन्तर्मुखी, कृशकाय, कल्पनाशील, चिन्तित रहने वाले।

4. **मिश्रित/विशालकाय (Mixed Type)** – इनका रूप ऊपर वाले तीनों रूपों का मिश्रण होता है।
   - क्रेशमर ने ऐसे व्यक्तियों को डायप्लास्टिक कहकर पुकारा है।

शैल्डन का वर्गीकरण

शैल्डन ने व्यक्तित्व को शारीरिक रचना के आधार पर अपनी पुस्तक "ATLAS OF MAN'' में तीन प्रकार बताये है–

1. **गोलाकार/एण्डोमोरफिक – (Endomorphic)** – इस प्रकार के व्यक्ति शक्तिहीन, मोटे, कोमल, आरामप्रिय, सामाजिक, स्नेहशील होते है।
2. **आयताकार/मीसो मोरफिक – (Mesomorphic)** – इस प्रकार के व्यक्ति संतुलित, स्वस्थ, साहसी, निडर, फुर्तिले, आशावादी, कर्मठ होते है।
3. **लम्बकाय/एक्टोमोरफिक – (Ecotomorphic)** – इस प्रकार के व्यक्ति कमजोर, शक्तिहीन, निराशावादी, एकांतवासी, चिड़चिड़ापन स्वभाव, असमायोजित होते है।

जुंग का वर्गीकरण [UPTET - 2017]

- जुंग ने व्यक्तियों का वर्गीकरण सामाजिकता के आधार पर अपनी पुस्तक "Psychological Type" में किया व व्यक्तिगत के मुख्यतः दो रूप अन्तर्मुखी व बर्हिमुखी माने है। जुंग ने तीसरे रूप में उभयमुखी व्यक्तित्व बताया जो अन्तर्मुखी व बर्हिमुखी का मिश्रण है।
  1. **अन्तर्मुखी (Introvert)** – इस प्रकार के व्यक्ति एकान्तप्रिय, उदासीन, अमिलनसार, कोरी कल्पना करने वाले, पढ़ने में रूचि वाले, आदर्शवादी, दृढ़ स्वभाव वाले होते है।
  2. **बर्हिमुखी (Ectrovert)** – इस प्रकार के व्यक्ति उत्साही, आशावादी, समाज हितैषी, सामाजिक कार्यों में रूचि, संभावनाओं में विश्वास रखने वाले परार्थी, दूसरों की प्रशंसा करने वाले होते है।
  3. **उभयमुखी (Ambivert)** – इसमें अन्तर्मुखी व बर्हिमुखी दोनों श्रेणियों के लोगों को शामिल किया जाता है।

स्प्रेंगर का वर्गीकरण

- स्प्रेंगर ने व्यक्ति के सामाजिक कार्य व स्थिति के आधार पर अपनी पुस्तक "TYPE OF MAN" में व्यक्तित्व के 6 प्रकार बताए है – **[HTET - 2014]**
  1. **सैद्धांतिक प्रकार (Thoretical Type)** – इस प्रकार के व्यक्ति प्रखर ज्ञानी एवं बुद्धिमान शिक्षक, कवि, दार्शनिक, लेखक होते है।
  2. **सामाजिक प्रकार (Social Type)** – इस प्रकार के व्यक्ति सामाजिक व मानव कल्याणकारी सामाजिक कार्यकर्ता, समाजसेवी होते है।
  3. **धार्मिक प्रकार (Religious Type)**– इस प्रकार के व्यक्ति पूजारी, भक्त, संत होते है।
  4. आर्थिक प्रकार (Economical Type) – इस प्रकार के व्यक्ति दुकानदार, उद्योगपति, व्यापारी होते है।
  5. **राजनैतिक प्रकार (Political Type)** – इस प्रकार के व्यक्ति राजनैतिक नेता होते है।

6. **सौंदर्यात्मक प्रकार (Aesthetic Type)** – इस प्रकार के व्यक्ति मूर्तिकार, कलाकार, साहित्यकार होते है।

थार्नडाइक का वर्गीकरण [UPTET - 2013]

थार्नडाइक ने व्यक्ति को चिन्तन व कल्पना के आधार पर व्यक्ति को तीन भागों में बाँटा है–

1. **गहन/सूक्ष्म विचारक** – इस प्रकार के व्यक्ति गहराई से सोचने वाले होते है।
2. **स्थूल विचारक** – इस प्रकार के व्यक्ति भौतिकवादी होते है।
3. **विचार/प्रत्यय प्रधान विचारक** – इस प्रकार के व्यक्ति साधारण ज्ञान रखने वाले होते है।

आलपोर्ट का वर्गीकरण

आलपोर्ट ने दो प्रकार बताए है –

1. **प्रभुतापूर्ण (Dominance)** – इस प्रकार के व्यक्ति नेतृत्वकर्त्ता, हार मानना पसंद नहीं करते है।
2. **अधीनस्थ (Subordinate)** – इस प्रकार के व्यक्ति नेतृत्व क्षमता कमजोर, कोरी कल्पना, अधिक इच्छा वाले होते है।

विलियम जेम्स का वर्गीकरण

- विलियम जेम्स ने व्यक्तित्व को प्रकृति एवं स्वभाव के आधार पर दो भागों में बाँटा है।
  1. **सरल स्वभाव वाले व्यक्ति** – आदर्शवादी, विनोद स्वभाव वाले होते है।
  2. **कठोर स्वभाव वाले व्यक्ति** – एकान्तवासी, असामाजिक होते है।

आइजनेक का वर्गीकरण [REET - 2018]

आइजनेक ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण चार भागों में किया है –

1. अन्तर्मुखता
2. बहिर्मुखता
3. उन्मादावस्था
4. साइकोटिसिज्म

टरमन का वर्गीकरण

- टरमन ने बुद्धि के आधर पर व्यक्तित्व को ग्यारह भागों में बाँटा है–
  1. अतिप्रतिभाशाली
  2. प्रतिभाशाली
  3. अति उत्कृष्ट
  4. उत्कृष्ट
  5. सामान्य
  6. मंद बुद्धि
  7. निर्बल बुद्धि
  8. हीन बुद्धि
  9. मुर्ख
  10. मुढ
  11. जड़

क्रेमचर के अनुसार शरीर रचना के 4 प्रकार है –

1. मिलनसार /नाटा
2. चुस्त / खिलाड़ी
3. शक्तिहीन
4. मिश्रित

मनोवैज्ञानिक सिद्धांत

1. **आलपोर्ट का विशेषांक सिद्धांत** – आलपोर्ट के अनुसार व्यक्ति में अनेक विशेषांक होते है जिनकी प्रकृति गत्यात्मक होती है।
   - आलपोर्ट ने तीन प्रकार के विशेषांक बताये है – **[UPTET - 2016]**

     (i) प्रमुख विशेषक – अत्यंत सामान्यकृत प्रवृत्तियाँ जो उस लक्ष्य को अंगित करती है जिससे चतुर्दिक व्यक्ति का पूरा जीवन व्यतीत होता है।
     जैसे – गाँधी का अहिंसावाद

     (ii) केन्द्रीय विशेषक – प्रभाव में कम व्यापक परन्तु सामन्यीकृत प्रवृतियाँ – स्फूर्ति निष्कपट, मेहनती जो की प्रायः लोगों के प्रशंसा पत्रों या नौकरी की संस्तुतियों में लिखे जाते है।

     (iii) गौण विशेषक – व्यक्ति की सबसे कम सामान्यीकृत प्रवृत्तियाँ।
     जैसे – मुझे क्रिकेट का मैच देखना अच्छा लगता है।
2. **कैटल का व्यक्तित्व कारक सिद्धांत/विशेषक सिद्धांत** – कैटल के अनुसार एक सामान्य संरचना होती है, जिसे लेकर व्यक्ति एक–दूसरे से भिन्न होते है। यह संरचना इन्द्रायानुभविष्य रीति से निर्धारित की जाती है।
   - कैटल ने व्यक्तित्व के मूल्यांकन के लिए एक परीक्षण विकसित किया जिसे सोलह व्यक्ति कारक प्रश्नावली के नाम से जाना जाता है।
   - कैटल ने बताया की शील गुण वे गुण होते है जो व्यवहार को निश्चित करते है।
   - कैटल ने बताया की सामान्य व्यक्ति में 23 गुण व असामान्य व्यक्ति में 12 गुण मिलते है।

     (i) **सतही शीलगुण** – जल्दी व्यक्त होने वाले गुण – प्रसन्नता, उतावलापन

     (ii) **मूल शीलगुण** – कैटल ने 16 मूल शीलगुणों को बताया है। **[UPTET - 2013]**
3. **व्यक्तित्व का पंच कारक मॉडल सिद्धांत** – प्रतिपादक – पॉल कास्टा व राबर्ट मैक्रे

   पंच कारक –

   (i) अनुभवों के लिए खुलापन

   (ii) बहिर्मुखता

   (iii) सहमती शीलता

   (iv) तंत्रिका ताप

   (v) अन्त र्विवेकशीलता

व्यक्तित्व का पंच–कारक मॉडल

निकट के वर्षों में आधारभूत व्यक्तित्व विशेषकों की संख्या को लेकर उत्पन्न हुए मत वैभिन्य से एक रूचिकर दिशा परिवर्तन हुआ है। पॉल कॉस्टा (Paual Costa) तथा राबर्ट मैक्रे (Robert McCrae) ने सभी संभावित व्यक्तित्व विशेषकों की जाँच कर पाँच कारकों के एक समुच्च के बारे में जानकारी दी है। इनको **बहत् पाँच कारकों** (Big Five Factors) के नाम से जाना जाता है। ये पाँच कारक निम्न हैं –

1. **अनुभवों के लिए खुलापन** – जो लोग इस कारक पर उच्च अंक प्राप्त करते हैं वे कल्पनाशील, उत्सुक, नए विचारों के प्रति उदारता एवं सांस्कृतिक क्रियाकलापों में अभिरूचि लेने वाले व्यक्ति होते हैं। इसके विपरीत कम अंक प्राप्त करने वाले व्यक्तियों में अनम्यता पाई जाती है।
2. **बहिर्मुखता** – यह विशेषता उन लोगों में पाई जाती है जिनमें सामाजिक सक्रियता, आग्रहिता, बहिर्गमन,
बातूनापन, और आमोद–प्रमोद के प्रति पसंदगी पाई जाती है। इसके विपरीत ऐसे लोग होते हैं जो शर्मीले और संकोची होते हैं।
3. **सहमतिशीलता –** यह कारक लोगों की उन विशेषताओं को बताता है जिनमें सहायता करने, सहयोग करने, मैत्रीपूर्ण व्यवहार करने, देखभाल करने एवं पोषण करने जैसे व्यवहार सम्मिलित होते हैं। इसके विपरीत वे लोग होते हैं आक्रामक और आत्म–केन्द्रित होते हैं।
4. **तंत्रिकाताप** – इस कारक पर उच्च अंक प्राप्त करने वाले लोग सांवेगिक रूप से अस्थिर, दुश्चितित, परेशान भयभीत, दुःखी, चिड़चिड़े और तनाग्रस्त होते हैं। इससे विपरीत प्रकार के लोग सुसमायोजित होते हैं।
5. **अंतर्विवेकशीलता** –इस कारक पर उच्च अंक प्राप्त करने वाले लोगों में उपलब्धि–उन्मुखता, निर्भरता, उत्तरदायित्व, दूरदर्शिता, कर्मठता और आम–नियंत्रण पाया जाता है। इसके विपरीत, कम अंक प्राप्त करने वाले लोगों में आवेग पाया जाता है।
व्यक्तित्व के क्षेत्र में यह पंच–कारक मॉडल एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक विकास का प्रतिनिधित्व करते हैं। विभिन्न संस्कृतियों में लोगों के व्यक्तित्व को समझने के लिए मॉडल अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुआ है। विभिन्न संस्कृतियों भाषाओं में उपलब्ध व्यक्तित्व विशेषकों के विश्लेषण से यह मॉडल संगत है और विभिन्न विधियों से काम किए गए व्यक्तित्व के अध्ययन भी मॉडल का समर्थक करते हैं। अतएव, आज व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए यह मॉडल सबसे महत्वपूर्ण आनुभाविक उपागम माना जाता है।

4. आइजेक का सिद्धांत – एच.जे. आइजेक ने व्यक्तित्व को तीन आयामों के रूप में प्रस्तावित किया है। आइजेक ने व्यक्तित्व का आधार जैविक एवं आनुवंशिकता के आधार पर वर्णन किया है–

(i) तांत्रिकातापिता बनाम सांवेगिक स्थिरता – तंत्रिका तापिता से ग्रसित लोगों में दुश्चिन्ता, चिड़चिड़ापन, अतिसंवेदनशीलता, बेचैनी और नियंत्रण का अभाव पाया जाता है। वहीं सांवेगिक स्थिरता वाले शांत, संयमित–स्वभाव, विश्वसनीय, स्वयं पर नियंत्रण वाले होते है।

(ii) बहिर्मुखता बनाम अन्तर्मुखता – बहिर्मुखता संक्रियता, सामाजिक आवेग, और रोमांच के प्रति पसंदगी युक्त होते है जबकि अर्न्तमुखी निष्क्रिय, शांत, सतर्क, चिंताग्रस्त, निराशावादी महत्वाकांक्षी की कमी से मुक्त होता है।

(iii) मनस्तापिता बनाम सामाजिकता – मनस्तापिता में पढ़ने में कमजोर, भटकने वाला, खराब स्वभाव वाला जबकि सामाजिकता में व्यक्ति अत्यन्त मिलनसार, विनम्र स्वभाव, समाज से मिलकर चलने वाला होते है।

5. मनोगतिक सिद्धांत/मनोविश्लेषण सिद्धांत – प्रतिपादक – सिगमण्ड फ्रायड

- फ्रायड ने व्यक्तित्व का सिद्धांत शारीरिक व सांवेगिक समस्याओं से ग्रस्त लोगों के लिए दिया जिसमें उन्होंने सम्मोहन से उसका उपचार किया।
- फ्रायड ने मन के आन्तरिक प्रकार्यों को समझने के लिए युक्त साहचर्य, स्वप्न विश्लेषण और त्रुटियों के विश्लेषण का उपयोग किया।

मुक्त साहचर्य विधि – इस विधि में व्यक्ति अपने मन में आने वाले सभी विचारों, भावनाओं, चिन्तनों को मुक्त भाव से व्यक्त करता है।

- फ्रायड ने चेतना के तीन स्तर बताए है –
  1. **चेतन स्तर** – इसके अंतर्गत वे चिंतन भावनाएँ, क्रियाऐं आती है जिनके प्रति लोग जागरूक रहते है, यह संपूर्ण मन का $\frac{1}{10}$ भाग होता है। बर्फ में तैरते टूकड़े के ऊपरी हिस्से से चेतन मन की तुलना की गई है।
  2. **अर्द्धचेतन** – इसके अंतर्गत वे मानसिक क्रियाऐं आती है जिनके प्रति लोग तभी जागृत होते है वे उन पर सावधानी पूर्वक ध्यान केन्द्रित करते है।
  3. **अचेतन** – यह सबसे बड़ा दमित इच्छाओं का भण्डार माना जाता है। इसमें अनैतिक इच्छाओं को प्रमुखता से स्थान मिलता है।
- अचेतन मन संपूर्ण मन का $\frac{9}{10}$ भाग होता है।
- फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व की संरचना तीन कारकों से मिलकर बनी होती है। जो निम्न है–

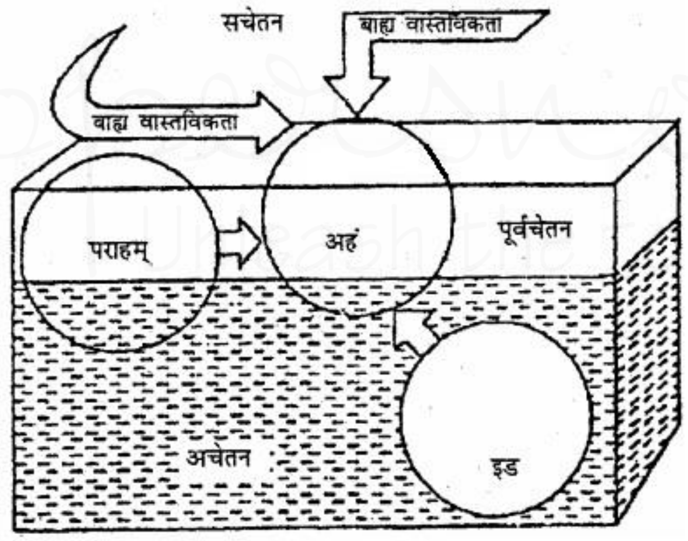

फ्रायड के सिद्धांत में व्यक्तित्व की संरचना

➢ **इड/इदम (Id)** – इच्छाओं का सर्वप्रथम उत्पन्न होना, इसमें उचित–अनुचित का ज्ञान नहीं होता है। **[REET - 2018]**

- यह अतृप्त इच्छाओं, मूल प्रवृत्तियों व दमित अनुभूतियों का भण्डार है।
- इसका उद्देश्य आनन्द करना होता है जिसमें व्यक्ति अनैतिक तरीके से इच्छापूर्ति की कोशिश करता है।
- इसमें मनुष्य का वास्तविकता से संबंध नहीं रहता है अतः इनको पशुत्व व राक्षसीय प्रवृत्ति कहा जा सकता है।

➢ **अहम (Ego)** – यह मनुष्य की वास्तविक स्थिति होती है। इसमें मनुष्य कोरी कल्पना को छोड़ वास्तविक जगत में विचरण करता है। **[UPTET - 2016]**

- इसमें मनुष्य प्रत्येक कार्य के परिणाम को पहले सोच लेता है।